नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौंदर्य रत्नाकरी
निर्धूताखिल घोर पावनकरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी ।
प्रालेयाचल वंश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥
नाना रत्न विचित्र भूषणकरि हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहार विलम्बमान विलसत-वक्षोज कुम्भान्तरी ।
काश्मीरागरु वासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥
योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मैक्य निष्ठाकरी
चंद्रार्कानल भासमान लहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यकरी तपः फलकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ३ ॥
कैलासाचल कन्दरालयकरी गौरी-ह्युमाशान्करी
कौमारी निगमार्थ-गोचरकरी-ह्योन्कार-बीजाक्षरी ।
मोक्षद्वार-कवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥
दृश्यादृश्य-विभूति-वाहनकरी ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरी
लीला-नाटक-सूत्र-खेलनकरी विग्न्यान-दीपान्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनः-प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ५ ॥
उर्वीसर्वजयेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी

वॆणी-नीलसमान-कुन्तलधरी नित्यान्न-दानॆश्वरी ।
साक्षान्मॊक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां दॆहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णॆश्वरी ॥ ६ ॥
आदिक्षान्त-समस्तवर्णनकरी शंभॊस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिपुरॆश्वरी त्रिनयनि विश्वॆश्वरी शर्वरी ।
स्वर्गद्वार-कपाट-पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां दॆहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णॆश्वरी ॥ ७ ॥
दॆवी सर्वविचित्र-रत्नरुचिता दाक्षायिणी सुन्दरी
वामा-स्वादुपयॊधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहॆश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां दॆहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णॆश्वरी ॥ ८ ॥
चन्द्रार्कानल-कॊटिकॊटि-सदृशी चन्द्रांशु-बिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्नि-समान-कुंडल-धरी चंद्रार्क-वर्णॆश्वरी
माला-पुस्तक-पाशसान्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां दॆहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णॆश्वरी ॥ ९ ॥
क्षत्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपासागरी
सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वॆश्वरी श्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां दॆहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णॆश्वरी ॥ १० ॥
अन्नपूर्णॆ सादापूर्णॆ शन्कर-प्राणवल्लभॆ ।
ग्न्यान-वैराग्य-सिद्धयर्थं बिक्बिं दॆहि च पार्वती ॥ ११ ॥

माता च पार्वतीदेवी पितादेवो महेश्वरः ।
बांधवा: शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम ॥ १२ ॥
सर्व-मन्गल-मान्गल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥ १३ ॥

www.yousigma.com